MATS UNIVERSITY
School of Arts & Humanities

Course Code- 0702MA

M.A. Hindi

(Two year Full Time Degree Course)

Semester Pattern
Choice Based Credit System

(SEMESTER SYSTEM)

(2022-2024)

MA - Hindi Literature

Course structure:

SEMESTER I						
Code	**Subject**	**Credit** **1Cr= 1 hrs**	**L+T+P**	**Univ.** **Exam Marks**	**Int. Marks**	**Total Marks**
CORE COURSES						
MSAH/MAH/101	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आरंभ से रीतिकाल तक)	6	5+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/102	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	6	5+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/103 (A)	छायावादी काव्य	4	3+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/103 (B)	जनसंचार एवं हिन्दी पत्रकारिता					
MSAH/MAH/104 (A)	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	4	3+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/104 (B)	समाचार संकलन, लेखन एवं तकनीक					
	Total	**20**	**16+4+0**	**420**	**120**	**400**

SEMESTER II

Code	Subject	Credit 1Cr= 1 hrs	L+T+P	Univ. Exam Marks	Int. Marks	Total Marks
CORE COURSES						
MSAH/MAE/201	निबंध और नाटक	6	5+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/202	वैकल्पिक किसी एक साहित्यकार	6	5+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/202 (A)	निराला का गद्य साहित्य					
MSAH/MAH/202 (B)	महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य					
MSAH/MAH/202 (C)	धनंजय वर्मा का गद्य साहित्य					
MSAH/MAH/202 (D)	हरिवंश राय बच्चन का गद्य साहित्य					
MSAH/MAH/203 (A)	हिन्दी साहित्य का इतिहास (भारतेंदु युग से अब तक)	4	3+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/203 (B)	संचार एवं इलेक्ट्रानिक प्रोद्योगिकी					
MSAH/MAH/204 (A)	छायावादोत्तर काव्य	4	3+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/204 (B)	मीडिया में लेखन शिल्प एवं प्रस्तुति					

	Total	20	16+4+0	280	120	400

SEMESTER III

Code	Subject	Credit 1Cr= 1hrs	L+T+P	Univ. Exam Marks	Int. Marks	Total Marks
CORE COURSES						
MSAH/MAH/301	पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत तथा आलोचना	6	5+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/302	भारतीय साहित्य	6	5+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/303 (A)	प्रयोजनमूलक हिन्दी	4	3+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/303 (B)	सोशल मीडिया					
MSAH/MAH/304 (A)	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य	4	3+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/304 (B)	संपादन कला					
	Total	**20**	**16+4+0**	**280**	**120**	**400**

SEMESTER IV

Code	Subject	Credit 1Cr= 1 hrs	L+T+P	Univ. Exam Marks	Int. Marks	Total Marks
CORE COURSES						
MSAH/MAH/401	उपन्यास एवं कहानी	6	5+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/402	हिन्दी समीक्षा	6	5+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/403 (A)	लोक साहित्य	4	3+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/403 (B)	मीडिया की आधुनिक प्रवृत्ति					
MSAH/MAH/404 (A)	छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य	4	3+1+0	70	30	100
MSAH/MAH/404 (B)	प्रचार, विज्ञापन एवं जनसंचार– परियोजना कार्य					
	Total	**20**	**16+4+0**	**280**	**120**	**400**

एम.ए. हिन्दी

Semester Pattern
Choice Based Credit System

प्रथम सेमेस्टर

1 प्रथम प्रश्न पत्र

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आरंभ से रीतिकाल तक)

उद्देष्य –विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के इतिहास का विस्तृत अध्ययन कराना।

पाठ्यांश

1 हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन का इतिहास, काल विभाजन, आदिकालीन साहित्यिक परंपराएँ–सिद्ध और नाथ साहित्य, जैन साहित्य, प्रमुख रासो काव्य और उनकी प्रमाणिकता ।

2 अमीर खुसरों की हिन्दी कविता, विद्यापति और उनकी पदावली, आदिकालीन हिन्दी साहित्य की सामान्य विशेषताएँ ।

3 भक्ति आंदोलन की उदय के सामाजिक सांस्कृतिक कारण, निर्गुण संत,प्रमुख सगुण भक्त, निर्गुण ओर सगुण भक्ति की मुख्य धाराएँ और उनकी शाखाएँ, भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएँ ।

4 भारत में सूफी मत का उदय और विकास, सूफी मत की सामान्य सिद्धांत, हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य ग्रंथ, सूफी काव्य धारा की सामान्य विशेषताएँ ।

5 दरबारी संस्कृति और रीतिकाल, रीतिकाल के मूल स्रोत, प्रमुख रीति कवि,रीतिकालीन काव्यधाराएँ, रीति काव्य की सामान्य विशेषताएँ।

परिणाम –हिन्दी साहित्य के पठन–पाठन और लेखन कला की उत्कृष्टता में वृद्धि होगी एवं विद्यार्थियों की तुलनात्मक अध्ययन क्षमता का विकास होगा।

अनुसंशित ग्रंथ–

1 हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल,नागरी प्रचारिणी सभा,

2 हिन्दी साहित्य की भूमिका–हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन

3 हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास–हजारी प्रसाद द्विवेदी,राजकमल प्रकाशन।

4 हिन्दी साहित्य का आदिकाल– हजारी प्रसाद द्विवेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद,पटना।

5 हिन्दी साहित्य का अतीत–विश्वनाथ प्रसाद मिश्र,वाणी प्रकाशन।

6 हिन्दी साहित्य का इतिहास–संपा,डॉ नगेन्द्र, नेशनल पब्लिकेशन हाउस दिल्ली।

7 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास –रामस्वरूप चतुर्वेदी लोकभारती प्रकाशन।

8 हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास–बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,

9 साहित्य का इतिहास दर्शन नलिन विलोचन शर्मा–बिहार राष्ट्र भाषा परिषद ,पटना।

10 हिन्दी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ–अवधेश प्रधान, साहित्य वाणी,इलाहाबाद।

11 साहित्य और इतिहास दृष्टि–मैनेजर पाण्डेय, पिपुल्स लिट्रेसी,दिल्ली।

2 द्वितीय प्रश्न–पत्र

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

उद्देष्य –विद्यार्थियों को भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा के स्वरूप व प्रकृति से परिचित कराना।

पाठ्यांश

1 भाषा :परिभाषा, तत्व, अंग,प्रकृति और विशेषताएँ। भाषा परिवर्तन के कारण व दिशाएँ। भाषा विज्ञान –परिभाषा एवं स्वरूप,अंग, पमुख अध्ययन–पद्धतियाँ।

2 रूपिम विज्ञान–शब्द और रूप(पद) संबंध तत्व और अर्थतत्व, रूप,संरूप,रूपिम और स्वनिम,रूपिमों का स्वरूप और वर्गीकरण।

3 वाक्य विज्ञान –वाक्य की परिभाषा,संरचना, निकटस्थ अवयव, वाक्य के प्रकार,वाक्य रचना में परिवर्तन–कारण व दिशाएँ।

4 अर्थ विज्ञान–शब्दार्थ संबंध विवेचन, अर्थ परिवर्तन के कारण व दिशाएँ

5 भाषा विज्ञान की प्रमुख शाखाएँ– समाज भाषा विज्ञान,शैली विज्ञान और कोश विज्ञान का सामान्य परिचय, संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी, नागरी लिपि का मानकीकरण, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ।

परिणाम –विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होगाएवं भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करने की क्षमता का विकास होगा।

अनुशंसित ग्रंथ

1 भाषा विज्ञान की भूमिका–देवेन्द्र नाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन।

2 भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी,किताब महल इलाहाबाद

3 सामान्य भाषा विज्ञान –बाबूराम सक्सेना हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

4 हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास–उदय नारायण तिवारी,भारती भंडार।

5 भाषा और समाज–रामविलास शर्मा,राजकमल प्रकाशन।

6 राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान–देवेन्द्र नाथ शर्मा लोकभारती।

7 भारत की भाषा समस्या– रामविलास शर्मा राजकमल प्रकाशन।

8 राजभाषा हिन्दी –प्रचलन और प्रसार'–डॉ.रामेश्वर प्रसाद, अनुपम प्रकाशन।

9 नागरी लिपि और हिन्दी –अनंत चौधरी दिल्ली माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय,दिल्ली।

3. तृतीय प्रष्न–पत्र (वैकल्पिक 1)

छायावादी काव्य

उद्देष्य –युगानुसार विद्यार्थियों को काव्यगगत विशेषताओं का अध्ययन करवाना।

पाठ्यांश

1 छायावाद –सामान्य परिचय, परिभाषा, विशेषताएँ।

2 जयशंकर प्रसाद –कामायनी (चिन्ता एवं श्रद्धा सर्ग)

3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– अनामिका (राम की शक्ति पूजा)

4 सुमित्रानंदन पंत–तारापथ(बादल, नौका विहार,परिवर्तन 1–10 पद)

5 महादेवी वर्मा–दीपशिखा(पंथ होने दो अपरिचित, यह मंदिर का दीप, मोम सा तन घुल चुका है, मैं पलकों में पाल रही हूँ।

परिणाम – विद्यार्थियों का रचनात्मक दृष्टिकोण निखरेगा एवं छायावादी युग के स्तंभ माने जाने वाले प्रसिद्ध कवियो ंकी रचनाओं से विद्यार्थियों की संवेगात्मक चेतना काव्य लेखन कला के प्रति प्रेरित होगी।

अनुशंसित ग्रंथ

1 महादेवी ग्रंथावली–महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन

2 जयशंकर प्रसाद–नंददुलारे वाजपेयी,भारती भंडार।

3 कामायनी–एक पुनर्विचार–मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन।

4 निराला की साहित्य साधना – रामविलास शर्मा,राजकमल प्रकाशन।

5 सुमित्रा नंदन पंत– डॉ.नगेन्द्र

6 छायावादः नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

7 महादेवी वर्मा : जगदीश गुप्त, नई दिल्ली,

8 छायावाद की प्रासंगिकता : रमेशचन्द्र शाह, नई दिल्ली।

9 छायावाद और नवजागरण : महेन्द्रनाथ राय, राधाकृष्ण प्रकाशन।

10 हिन्दी साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ– नामवर सिंह।

3.1तृतीय प्रश्न–पत्र (वैकल्पिक 2)

जनसंचार एवं हिन्दी पत्रकारिता

उद्देष्य –जनसंचार माध्यमों एवं हिन्दी पत्रकारिता का विस्तार से अध्ययन कराना जिससे विद्यार्थियों को जनसंचार एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में कैरियर निर्माण के प्रति प्रेरित किया जा सके।

पाठ्यांश

1 जनसंचार का अर्थ, परिभाषाएँ, महत्व, प्रकृति

2 जनसंचार माध्यमों का स्वरूप, आधुनिक माध्यम, पारंपरिक माध्यम, मुद्रण, श्रव्य, दृश्य, इंटरनेट

3 पत्रकारिता का अर्थ, स्वरूप, परिभाषाएँ, कार्यक्षेत्र

4 हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, वर्तमान स्वरूप,

5 पत्रकारिता के विविध आयाम

परिणाम –जनसंचार एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार की विस्तृत संभावनाएँ हैं। इस विषय का सूक्ष्म अध्ययन विद्यार्थियों के कौशल विकास में सहायक बनेगा एवं उनके कैरियर का निर्माण होगा।

अनुशंसित ग्रंथ

1 सम्पूर्ण पत्रकारिता : डॉ. अर्जुन तिवारी, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

2 पत्रकारिता : सिद्धांत एवं स्वरूप, डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

3 भारत में पत्रकारिता : आलोक मेहता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली

4 हिन्दी पत्रकारिता, स्वरूप एवं संदर्भ : डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

5 हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव, जवाहरलाल कौल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

4 चतुर्थ प्रश्न पत्र–(वैकल्पिक 1)

प्राचीन एवं मध्य कालीन काव्य

उद्देश्य –विद्यार्थियों को प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य साहित्य से परिचित कराकर उनमें तुलनात्मक अध्ययन क्षमता का विकास करना।

पाठ्यांश

1 कबीर ग्रंथावली–संपा.– डॉ.श्याम सुंदरदास (90 साखियां)
साखियां– गुरूदेव को अंग 1–20, सुमिरण को अंग 1–10, विरह को अंग 1–10, ज्ञान विरह को अंग 1–10, रस को अंग 1–05,निहकर्मी पतिव्रता 1–10, चितावणी 1–10, माया 1–5,काल को अंग1–10 तक।
2 सूरदास–भ्रमरगीत सार–संपा. आचार्य रामचंद्र शुक्ल 1–50पद
3 तुलसीदास– रामचरित मानस – सुंदर काण्ड
4 बिहारी– बिहारी रत्नाकर–संपा जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर (प्रारंभिक 100 दोहे)
5 खण्डेराव–राधा विनोद– कृष्ण रूक्मिणी विवाह, संपा. डॉ.सत्यभामा आडिल।

परिणाम –कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, बिहारी जैसे कवियों की भाषा शैली का तुलनात्मक अध्ययन विद्यार्थियो के साहित्यिक ज्ञान में वृद्धि करेगा।

अनुशंसित ग्रंथ

1 हिन्दी साहित्य का इतिहास –आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2 राधा विनोद– सं. डॉ. सत्यभामा आडिल(विकल्प प्रकाशन, रायपुर)
3 कबीर का रहस्यवाद– डॉ. रामकुमार वर्मा।
4 कबीर साहित्य की परख–परशुराम चतुर्वेदी
5 सूरदास काव्य का मूल्यांकन– डॉ. रामरतन भटनागर
6 सूर साहित्य–डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
7 महाकवि तुलसी दास और उनका युग सन्दर्भ–डॉ. भागीरथ मिश्र
8 बिहारी का मूल्यांकन–डॉ.बलदेव प्रसाद मिश्र
9 मुक्तक काव्य परंपरा और बिहारी–डॉ. रामसागर त्रिपाठी
10 कबीर –डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
11 प्रमुख प्राचीन कवि–डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना
12 त्रिवेणी– आचार्य रामचंद्र शुक्ल , लोकभारती प्रकाशन।

4.1 चतुर्थ प्रश्न पत्र–(वैकल्पिक 2)

समाचार संकलन, लेखन एवं तकनीक

उद्देश्य –विद्यार्थियों को पत्रकारिता के क्षेत्र में पारंगत करने हेतु समाचार संकलन, लेखन एवं तकनीक का प्रशिक्षण प्रदान करना।

1. समाचार का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, समाचार के तत्व
2. समाचार के प्रकार, समाचार पत्र, पत्रों के प्रकार, समाचार समितियाँ
3. समाचार लेखन कला, आमुख, आमुख लेखन के प्रकार, समाचार लेखन के तत्व
4. शीर्षक, शीर्षक संरचना, उद्देश्य
5. समाचार संकलन, समाचारों के स्त्रोत, समाचारों का फालोअप

अनुशंसित ग्रंथ –

1 सम्पूर्ण पत्रकारिता : डॉ. अर्जुन तिवारी, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

2 पत्रकारिता : सिद्धांत एवं स्वरूप, डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

3 भारत में पत्रकारिता : आलोक मेहता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली

4 इलेक्ट्रानिक मीडिया, डॉ, संजीव भानावत, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर

5 हिन्दी पत्रकारिता, स्वरूप एवं संदर्भ : डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

6 हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव, जवाहरलाल कौल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

परिणाम –विद्यार्थियों को समाचार लेखन की तकनीक का ज्ञान हो सकेगा एवं उन्हें मीडिया के विभिन्न माध्यमों में रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकेंगे।

द्वितीय सेमेस्टर

1 प्रथम प्रष्न–पत्र – निबंध और नाटक

उद्देश्य –इस विषय को पाठ्यक्रम में शामिल करने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों मेंगद्य विधाओं को समझने, उसका आस्वादन करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि को विकसित करना है।

पाठ्यांश

1 रामचंद्र शुक्ल–चिंतामणी भाग 1 (पांच निबंध–भाव या मनोविकार, करूणा, लोभ और प्रीति,कविता क्या है ?, लोक मंगल की साधनावस्था)

2 हजारी प्रसद द्विवेदी –अशोक के फूल(पांच निबंध–बसंत आ गया, अशोक के फूल, भारतीय संस्कृति की देन,साहित्यकारों का दायित्व, मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है।)

3 भारतेंदु हरिशचंद्र–अंधेर नगरी

4 जयशंकर प्रसाद–स्कंदगुप्त

5 लक्ष्मीनारायण लाल –एक सत्य हरिशचंद

परिणाम – अनुभवी व प्रसिद्ध निबंधकारों एवं नाटककारों की लेखन शैली का परिचय प्राप्त कर विद्यार्थी गद्य विधाओं की तात्विक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे एवं लेखन हेतु प्रेरित होंगे।

अनुशंसित ग्रंथ–

1 रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना–रामविलास शर्मा,राजकमल प्रकाशन

2 दूसरी परंपरा की खोज : नामवर सिंह , राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

3 रामचंद्र शुक्ल–मलयज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

4 आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य –चौथीराम यादव ,हरियाणा ग्रंथ अकादमी।

5 हिन्दी नाटक –बच्चन सिंह ,लोकभारती प्रकाशन।

6 अंधेर नगरी'– भारतेंदु हरिशचंद

7 स्कंदगुप्त– जयशंकर प्रसाद

8 हिन्दी नाटक उद्भव विकास– दशरथ ओझा राजपाल एंड संस

9 एक सत्य हरिशचंद–लक्ष्मीनारायण लाल

10 हिन्दी नाट्यशास्त्र का स्वरूप –डॉ. नर्वदेश्वर राय हिंदी ग्रंथ कुटीर पटना।

2 द्वितीय प्रष्न पत्र –

वैकल्पिक किसी एक साहित्यकार के सम्पूर्ण साहित्य का अध्ययन

उद्देश्य –प्रसिद्ध साहित्यकारों के सम्पूर्ण गद्य साहित्य का ज्ञान विद्यार्थियों को देना।

पाठ्यांश

1. महादेवी वर्मा गद्य साहित्य।
2. हरिवंशराय बच्चन का गद्य साहित्य।
3. धनंजय का गद्य साहित्य, ।
4. निराला का गद्य साहित्य।
   (किसी एक का सम्पूर्ण अध्ययन)

परिणाम – विद्यार्थी साहित्यकारों की उत्कृष्ट गद्य शैली से अवगत हो सकेंगे एवं उत्कृष्ट लेखन कला के प्रति प्रोत्साहित होंगे।

3. तृतीय प्रष्न–पत्र (वैकल्पिक 1)

हिन्दी साहित्य का इतिहास (भारतेंदु युग से अब तक)

उद्देष्य–विद्यार्थी .युगानुरूप साहित्य के क्षेत्र में आए परिवर्तनों से अवगत हो सकें।

पाठ्यांश

1 1857 की राज्यक्रांति और सांस्कृतिक नवजागरण – भारतेन्दु और उनका मंडल – 19वीं शताब्दी की प्रमुख हिंदी पत्र और पत्रिकाएँ– भारतेन्दुकालीन साहित्य की विशेषताएँ ।

2 महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग – 'सरस्वती' और हिंदी नवजागरण – द्विवेदी युग के प्रमुख गद्यलेखक – मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा ।

3 हिंदी में उपन्यास का उदय – प्रेमचंद का महत्व

4 हिंदी में कथासाहित्य, नाटक, निबंध, समालोचना आदि गद्य विधाओं का उदय और विकास। प्रमुख छायावादी कवि ।

5 प्रगतिशील आंदोलन – प्रगतिशील साहित्य की विशेषताएँ– प्रयोगवाद और नयी कविता – नवगीत–अकविता आंचलिक उपन्यास और उपन्यासकार – नई कहानी – अकहानी – साठोत्तरी साहित्य की सामान्य विशेषताएँ ।

परिणाम – विद्यार्थियोंमें हिन्दी साहित्य की पद्य एवं गद्य विधाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता का विकास होगा।

अनुशंसित ग्रंथ :

1 हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2 हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद
4 हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
5 आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
6 हिन्दी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ– अवधेश प्रधान, साहित्य वाणी, इलाहाबाद
7 हिन्दी नवगीत का संक्षिप्त इतिहास – अवधेश नारायण मिश्र, आर्यभाषा संस्थान, वाराणसी

3.1तृतीय प्रष्न–पत्र (वैकल्पिक 2)

उद्देश्य –विद्यार्थियों को पत्रकारिता के क्षेत्र में संचार और इलेक्ट्रानिक प्रोद्योगिकी का ज्ञान प्रदान करना।

संचार एवं इलेक्ट्रानिक प्रोद्योगिकी

पाठ्यांश

1. संचार का अर्थ, परिभाषाएँ, स्वरूप, प्रक्रिया, संचार सारणियाँ
2. इलेक्ट्रानिक मीडिया, स्वरूप, महत्व
3. आकाशवाणी : उद्‌भव और विकास,
4. दूरदर्शन : उद्‌भव और विकास,
5. एफ.एम रेडियो, सामुदायिक रेडियो, फिल्म, डाक्यूमेंट्री

अनुसंशित ग्रंथ –

1 सम्पूर्ण पत्रकारिता : डॉ. अर्जुन तिवारी, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2 पत्रकारिता : सिद्धांत एवं स्वरूप, डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
3 भारत में पत्रकारिता : आलोक मेहता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली
4 इलेक्ट्रानिक मीडिया, डॉ, संजीव भानावत, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
5 हिन्दी पत्रकारिता, स्वरूप एवं संदर्भ : डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6 हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव, जवाहरलाल कौल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

7 भारतीय पत्रकारिता, मुद्दे और अपेक्षाएं : बबनप्रसाद मिश्र, श्री प्रकाशन, छत्तीसगढ़

परिणाम –विद्यार्थियों को संचार, इलेक्ट्रानिक मीडिया के विभिन्न माध्यमों में लेखन, प्रस्तुतिकरण की कला में पारंगत किया जा सकेगा जिससे इलेक्ट्रानिक मीडिया के क्षेत्र में उन्हें कैरियर निर्माण के अवसर प्राप्त होंगे।

4. चतुर्थ प्रश्न–पत्र (वैकल्पिक 1)

छायावादोत्तर काव्य

उद्देश्य –विद्यार्थियों को आधुनिक काव्य प्रवृत्तियों से अवगत कराना।

पाठ्यांश :

1 चाँद का मुँह टेढ़ा है : मुक्तिबोध (अंधेरे में)
2 आँगन के पार द्वार : अज्ञेय (असाध्य वीणा)
3 उर्वशी : दिनकर (तीसरा सर्ग)
4 संसद से सड़क तक : धूमिल (पटकथा)

अनुशंसित ग्रंथ :

1 मुक्तिबोधः ज्ञान और संवेदना – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2 नयी कविता और अस्तित्ववाद – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3 अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या – रामस्वरूप चतुर्वेदी, नई दिल्ली
4 समकालीन हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, नई दिल्ली
5 समकालीन कविता का यथार्थ – परमांनद श्रीवास्तव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी
6 समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ – रामकली सराफ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
7 अज्ञेय और नई कविता – चंद्रकला त्रिपाठी, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
8 साहित्य और समय – अवधेश प्रधान, साहित्य वाणी, इलाहाबाद

परिणाम–विद्यार्थियों को छायावादोत्तर युग–प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, नई कविता के विषय में जानकारी प्राप्त होगी एवं उनमें तुलनात्मक अध्ययन क्षमता का विकास होगा।

4.1 चतुर्थ प्रष्न–पत्र (वैकल्पिक 2)

मीडिया में लेखन षिल्प एवं प्रस्तुति

उद्देष्य–विद्यार्थियों में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में लेखन एवं प्रस्तुति की कला में पारंगत करना।

पाठ्यांश

1. रेडियो में लेखन, प्रमुख सिद्धांत, रेडियो की समाचार संरचना
2. रेडियो की भाषा, रेडियो वाचन के सिद्धांत, एंकरिंग, समाचार कार्यक्रम
3. आकाशवाणी कार्यक्रमों का स्वरूप एवं सरचना
4. टेलीविजन पत्रकारिता, टेलीविजन के लिए लेखन, न्यूज एंकरिंग
5. टी.वी. न्यूज रूम, इलेक्ट्रानिक मीडिया हाऊस भ्रमण एवं परियोजना

अनुशंसित ग्रंथ

1 सम्पूर्ण पत्रकारिता : डॉ. अर्जुन तिवारी, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

2 पत्रकारिता : सिद्धांत एवं स्वरूप, डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

3 भारत में पत्रकारिता : आलोक मेहता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली

4 हिन्दी पत्रकारिता, स्वरूप एवं संदर्भ : डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

5 हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव, जवाहरलाल कौल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

परिणाम – विद्यार्थियों को जनसंचार के विभिन्न माध्यमों रेडियो, टेलीविजन आदि में लेखन की तकनीक का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा जिससे वे इस क्षेत्र में कैरियर का निर्माण कर सकेंगे।

तृतीय सेमेस्टर

1. प्रथम प्रश्न–पत्र पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत तथा आलोचना

उद्देश्य –विद्यार्थियों को पाश्चात्य विचारकों के सिद्धांतों एवं विचारों से अवगत कराना।

पाठ्यांश

1 प्लेटो – प्रत्यय सिद्धान्त, काव्यप्रेरणा, अनुकृति, काव्य पर आरोप । अरस्तू – अनुकृति, विरेचन, त्रासदी, प्लेटो और अरस्तू ।

2 लॉन्जाइनस – काव्य में उदात्त की अवधारणा । वड्वर्थ – काव्यभाषा का सिद्धांत कॉलरिज – कल्पना और फैन्सी क्रोचे – अभिव्यंजनावाद

3 टी. एस. इलियट– परम्परा और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत , वस्तुनिष्ठ समीकरण। आई ए. रिचड्र्स– मूल्यसिद्धांत, संप्रेषण सिद्धांत ।

4 नई समीक्षा' की प्रमुख अवधारणाएँ ।

5 शास्त्रीयतावाद (क्लासिसिज्म) और स्वच्छंदतावाद (रोमांटिसिज्म), यथार्थवाद, साहित्य का समाजशास्त्र, साहित्यिक शैली विज्ञान का सामान्य परिचय)

अनुशंसित ग्रंथ :

1 लिटरेरी क्रिटिसिज्म – ए शार्ट हिस्ट्री : विम्डासाट विलियम्स के ऐंड क्लीन्थ बुक्स, लंदन।

2 पाश्चात्य काव्यशास्त्र – देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

3 नई समीक्षा के प्रतिमान – निर्मला जैन, राजकमल, दिल्ली

4 पाश्चात्य समीक्षा शास्त्र : सिद्धांत और परिदृश्य – नगेन्द्र

5 कविता के नये प्रतिमान – नामवर सिंह, राजकमल, दिल्ली

6 पाश्चात्य साहित्य चिंतन – निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

7 आलोचक और आलोचना – बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली

8 आलोचना के बीज शब्द – बच्चन सिंह

9 साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका – मैनेजर पांडेय, हरियाणा ग्रंथ अकादमी

परिणाम–भारतीय विचारकों के साथ–साथ पाश्चात्य विचारकों के काव्य संबंधी मतों से छात्रों के ज्ञान में अभिवृद्धि होगी।

2. द्वितीय प्रष्न–पत्र – भारतीय साहित्य

उद्देष्य–हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के साहित्य का अध्ययन कराना।

पाठयांश

1 भारतीय साहित्य का स्वरूप
2 भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
3 भारतीय साहित्य में आज के भारत की बिंब
4 भारतीय का समाज षास्त्र
5 हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति

हिन्दीतर साहित्य का अध्ययन –(किसी एक पर)

1 दाक्षिणात्य भाषा वर्ग में मलयालम (कविता संग्रह – कोच्चि के दरख्त –के• जी• शंकर पिल्लै)
2 पूर्वांचाल भाषा वर्ग में बंगला (उपन्यास– अग्निगर्भ – महाश्वेता देवी)
3 नाटक (हयवदन –गिरीष कर्नाड)

अनुशंसित ग्रंथ :

1 अग्निगर्भ (बंगला) – महाश्वेता देवी, किताब क्लब, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2 इक्कीस बंगला कहानियाँ – नेशनल बुक ट्रस्ट , इंडिया ए–5, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली
3 राष्ट्रीय चेतना और मलयालम साहित्य – प्रो.आर. सुरेन्द्रन, हिन्दी विभाग, कालीकट विवि. केरल
4 बंगला भाषा और साहित्य का इतिहास– भारतीय भाषा संस्थान, इलाहाबाद।
5 भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ – डॉ. रामविलास शर्मा
6 भारतीय भाषाओं के साहित्य का इतिहास – केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली
7 भारतीय साहित्य– सं. डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
8 समसामयिक हिन्दी कहानियाँ– डॉ. धनंजय वर्मा

परिणाम–विद्यार्थियों में हिन्दी और अन्य भाषा–भाषी के साहित्यकारों की भाषा शैली, काव्य पक्ष, भाव पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन करने की क्षमता बढ़ेगी।

3. तृतीय प्रष्न–पत्र (वैकल्पिक 1)

प्रयोजनमूलक हिन्दी

उद्देष्य–विद्यार्थियों को हिन्दी व्याकरण की विभिन्न कोटियों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना।

पाठयांश

1. मातृभाषा एवं अन्य भाषा के रूप में हिन्दी सम्पर्क भाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, बोलचाल की सामान्य हिन्दी, मानक हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी, संविधान में हिन्दी ।
2. हिन्दी भाषा की सामाजिक शैलियाँ : हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी, मौलिक और लिखित हिन्दी, हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास, मानक हिन्दी की संकल्पना, हिन्दी का मानकीकरण ।
3. हिन्दी के प्रयोग–क्षेत्र : भाषा–प्रयुक्ति की संकल्पना, वार्ता क्षेत्र, वार्ता प्रकार और वार्ता शैली के आधार पर हिन्दी के प्रमुख प्रवृत्ति, क्षेत्र, साहित्यिक हिन्दी बनाम प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयोजन एवं उसकी उपयोगिता ।
4. प्रयोजनमूलक हिन्दीकुछ प्रमुख प्रकार : कार्यालयीन हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण, वैज्ञानिक हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण, वृत्तिपरक हिन्दी (लुहार, कुम्हार, सोनार आदि से संबंधित प्रयुक्तियाँ), व्यावसायिक हिन्दी और उसके लक्षण, संचार माध्यम (आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र) की हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण, विज्ञान की हिन्दी और उसके प्रमुख लक्षण ।
5. भाषा व्यवहार : सरकारी पत्राचार, टिप्पणी तथा मसौदा–लेखन, सरकारी अथवा व्यावसायिक हिन्दी में सार–लेखन, हिन्दी में पारिभाषिक शब्द–निर्माण की प्रवृत्तियाँ, विज्ञान प्रस्तुति, वृत्तिपरक लेखन ।

अनुशंसित ग्रंथ :

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ दंगल झाल्टे ।
2. कार्यालय कार्यबोध – हरिबाबू बंसल ।
3. कामकाजी हिन्दी– डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया ।
4. हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी, पद्‌म सिंह शर्मा ।
5. व्यावहारिक हिन्दी– कृष्ण विकल ।
6. हिन्दी का सामाजिक संदर्भ – डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं रमानाथ सहाय केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
7. राष्ट्रभाषा और हिन्दी – डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा
8. भाषा आन्दोलन – सेठ गोविन्ददास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

9. हिन्दीभाषा की सामाजिक भूमिका – डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं मुकुल प्रियदर्शनी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास ।
10. सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग – गोपीनाथ श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11. प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ।
12. प्रशासनिक हिन्दी निपुणता – हरिबाबू कंसल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
13. आवेदन प्रारूप – डॉ. एस. एन. चतुर्वेदी, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली ।

परिणाम –विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा के विविध रूप जैसे कार्यालयीन हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी एवं बोलचाल की हिन्दी की जानकारी प्राप्त होगी।

3.1 तृतीय प्रष्न–पत्र (वैकल्पिक 2)

सोषल मीडिया

उद्देष्य–विद्यार्थियों को मीडिया की आधुनिक प्रवृत्ति से अवगत कराना।

पाठयांश

1. सोशल मीडिया का अर्थ, स्वरूप, विशेषताएँ, महत्व
2. इंटरनेट की विकास यात्रा, इतिहास, वर्तमान स्वरूप
3. न्यू मीडिया, अर्थ, स्वरूप, न्यू मीडिया और समाज
4. सोशल मीडिया और हिन्दी भाषा, सोशल मीडिया कानून
5. जनसम्पर्क और सोशल मीडिया, सोशल मीडिया और लोकतंत्र, नकारात्मक और सकारात्मक प्रभाव

अनुशंसित ग्रंथ

1 सम्पूर्ण पत्रकारिता : डॉ. अर्जुन तिवारी, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2 पत्रकारिता : सिद्धांत एवं स्वरूप, डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
3 भारत में पत्रकारिता : आलोक मेहता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली
4 हिन्दी पत्रकारिता, स्वरूप एवं संदर्भ : डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5 हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव, जवाहरलाल कौल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

परिणाम–विद्यार्थियों को सोशल मीडिया, न्यू मीडिया, ई–मीडिया की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी और मीडिया के आधुनिक माध्यमों में कैरियर बना सकेंगे।

4. चतुर्थ प्रष्न–पत्र वैकल्पिक 1)

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी साहित्य

उद्देष्य–स्वतंत्रता के पश्चात रचित साहित्य के स्वरूप का परिचय कराना।

पाठ्यांश :

1. रागदरबारी – श्रीलाल शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली । एक दुनिया समानांतर – सं. राजेन्द्र यादव (खोई हुई दिशाएँ, एक और जिंदगी, तीसरी कसम, बदबू, सेलर)
2. कबिरा खड़ा बाजार में – भीष्म साहनी
3. प्रतिनिधि कविताएँ – नागार्जुन, सं. डॉ. नामवर सिंह (प्रतिबद्ध हूँ, हरिजन गाथा, पैने दाँतों वाली, अकाल और उसके बाद, बहुत दिनों के बाद)
4. हँसो हँसो जल्दी हँसो – रघुवीर सहाय (चुनी हुई कविता – दो अर्थ का भय, आज का पाठ है, हंसो हंसो जल्दी हंसो, चेहरा, हैं हैं हैं।
5. प्रतिनिधि कविताएँ–केदारनाथ सिंह, सं. परमानन्द श्रीवास्तव (चुनी हुई कविताएँ– रोटी, जमीन , पानी में घिरे हुए लोग, बनारस, टूटा हुआ ट्रक)।

अनुशंसित ग्रंथ :

1. तारसप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक (सं.) अज्ञेय, ज्ञानपीठ ।
2. समकालीन कविता का यथार्थ – डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, हरियाणा अकादमी
3. मुक्तिबोध की रचना प्रक्रिया – अषोक चक्रधर ।
4. भाशा औरसंवेदना – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. एक साहित्यिक की डायरी – गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. कविता के नये प्रतिमान – डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
7. नयी कविता : स्वरूप और संवेदना – डॉ. जगदीश गुप्त ।
8. समकालीन हिन्दी कहानी – दिशा और दृष्टि – सं. डॉ. धनंजय ।
9. नयी कहानी : संदर्भ और प्रकृति – सं. देवीशंकर अवस्थी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. आधुनिकता और उपन्यास – डॉ. इन्द्रनाथ मदान ।
11. रंगदर्शन – नेमिचन्द जैन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।

12. आधुनिक परिवेष और नवलेखन – डॉ. शिव प्रसाद सिंह, लोकभारती इलाहाबाद ।
13. नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान – डॉ. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, जगतराम एंड संस, दिल्ली ।कहानी : नयी कहानी, डॉ. नामवर सिंह – लोकभारती, इलाहाबाद ।
14. नई कविता और अस्तित्ववाद – डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।
15. शब्द और मनुष्य – परमानंद श्रीवास्तव – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
16. आधुनिक कविता के बदलते प्रतिमान – डॉ. श्रीनिवास पाण्डेय, आशुतोष प्रकाशन, वाराणसी।
17. जनवादी समझ और साहित्य – डॉ. रामनारायण शुक्ल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
18. समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ – डॉ. रामकली सराफ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

परिणाम–स्वातंत्रयोत्तर साहित्य के माध्यम से समकालीन परिवेश के यथार्थ स्वरूप से विद्यार्थी अवगत होंगे।

4.1 चतुर्थ प्रष्न–पत्र वैकल्पिक 2)

संपादन कला

उद्देष्य–मीडिया के मुद्रित माध्यमों में विद्यार्थियों को संपादन कला की जानकारी प्रदान करना।

पाठयांश

1. संपादक, आशय एवं कार्य, आचार संहिता
2. संपादकीय विभाग की संरचना, कार्य
3. संपादकीय पृष्ठ, संपादकीय लेखन, प्रकार, अग्रलेख की प्रस्तुति
4. पृष्ठ सज्जा, उद्देश्य, प्रकार
5. समाचार पत्रों के कार्यालयों का भ्रमण एवं परियोजना

अनुशंसित ग्रंथ

1 सम्पूर्ण पत्रकारिता : डॉ. अर्जुन तिवारी, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2 पत्रकारिता : सिद्धांत एवं स्वरूप, डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
3 भारत में पत्रकारिता : आलोक मेहता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली
4 हिन्दी पत्रकारिता, स्वरूप एवं संदर्भ : डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5 हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव, जवाहरलाल कौल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

परिणाम –विद्यार्थियों को समाचार पत्र–पत्रिकाओं में संपादन कला का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा जिससे वे इस क्षेत्र में सेवा के अवर प्राप्त कर सकेंगे।

चतुर्थ सेमेस्टर

1. प्रथम प्रष्न–पत्र – उपन्यास एंव कहानी

उद्देष्य–उपन्यास एवं कहानी के स्वरूपों को बताते हुए कथा साहित्य का परिचय कराना।

पाठ्यांश

1. मन्नू भंडारी–महाभोज
2. अलका सारावगी–कलिकथा–वाया वाई पास।
3. ममता कालिया–जांच अभी जारी है ।
4. कहानियॉ –परिंदे (निर्मल वर्मा),जिंदगी और जोंक(अमरकांत),चाचा मंगल संन(भीष्म साहनी), भोलाराम का जीव(हरिशंकर परसाई), घंटा(ज्ञानरंजन), अपना रास्ता लो बाबा(काशीनाथ सिंह), भोले बादशाह(कृष्णा सोबती)

अनुशंसित ग्रंथ

1. मन्नू भंडारी–महाभोज
2. उपन्यासकार हजारी प्रसाद द्विवेदी–त्रिभूवन सिंह।
3. ममता कालिया जांच अभी जारी है ।
4. विवेक के रंग–देवी शकर अवस्थी –भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली
5. हिन्दी उपन्यास शिव नारायण श्रीवास्तव सरस्वती मंदिर वाराणसी।
6. अधूरे साक्षात्कार–नेमीचंद जैन
7. कहानी नई कहानी –नामवर सिंह राजकमल दिल्ली ।
8. कहानी आंदोलन की भूमिका –बलिराज पांडे अनामिका प्रकाशन इलाहाबादं
9. आज की हिन्दी कहानी –विजयमोहन सिंह दिल्ली
10. कृष्णा सोबती–बादलों के घेरे में आधार प्रकाशन हरियाण
11. भीष्म साहनी की प्रतिनिधि कहानियाँ राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।

परिणाम .– विद्यार्थी उपन्यास एवं कहानी के उदभव एवं विकास की जानकारी से अवगत होंगे ।

2. द्वितीय प्रष्न–पत्र – हिन्दी समीक्षा

उद्देष्य–हिन्दी साहित्य में आलोचना सिद्धांत एवं आलोचकों से अवगत कराना।

पाठ्यांश :

1. रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य चिंतन का आकलन ।
2. नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा के साहित्य चिंतन का आकलन ।
3. डॉ. नगेन्द्र और नामवर सिंह के आलोचना–कर्म का सम्यक परिशीलन ।
4. प्रेमचंद, प्रसाद, निराला के साहित्य चिंतन का आकलन ।
5. अज्ञेय और मुक्तिबोध के साहित्य चिंतन का आकलन ।

अनुशंसित ग्रंथ :

1. हिन्दी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. हिन्दी आलोचना का विकास –नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हिन्दी आलोचक : शिखरों का साक्षात्कार – रामचंद्र तिवारी, लोकभारती, इलाहाबाद
4. आलोचक के बदलते मानदंड और हिन्दी साहित्य – शिवकरण सिंह, किताब महल, इलाहाबाद
5. आलोचक और आलोचना – बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
6. रामचंद्र शुक्ल और हिन्दीआलोचना – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. दूसरी परम्परा की खोज – नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. साहित्य का नया शास्त्र – गिरिजा राय, इलाहाबाद
9. हिन्दी काव्यशास्त्र पर आचार्य मम्मट का प्रभाव – राधेश्याम राय, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।

परिणाम –विद्यार्थियों मेंहिन्दी साहित्य की गद्य एवं पद्य रचनाओं की सम्यक विवेचना की क्षमता का विकास होगा।

3. तृतीय प्रष्न–पत्र (वैकल्पिक 1)

लोक साहित्य

उद्देष्य–विद्यार्थियों को विभिन्न प्रदेशों के लोक साहित्य की जानकारी प्रदान करना।

पाठ्यांश

1. लोकसाहित्य – परिभाषा एवं स्वरूप, लोक साहित्य की अवधारणा, लोक संस्कृति और साहित्य
2. लोक गीत – संस्कार गीत, व्रत गीत, श्रम परिहार गीत, ऋतु गीत
3. लोकनाट्य – रामलीला, स्वांग, यक्षगान, भवई, तमाशा, नौटंकी, जात्रा, कत्थकली
4. लोक कथा – व्रत कथा, परी कथा, बोध कथा, कथानक रूढ़ियाँ एवं अभिप्राय
5. लोक गाथा की भारतीय परंपरा, लोक गाथा की सामान्य प्रवृत्तियाँ, लोक गाथा प्रस्तुति

अनुशंसित ग्रंथ :

1. लोकसाहित्य विज्ञान – सत्येन्द्र, शिवलाल एंड कंपनी, आगरा ।
2. लोक साहित्य की भूमिका – कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद
3. लोकसाहित्य का अध्ययन – त्रिलोचन पांडेय, लोकभारती, इलाहाबाद
4. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास (सोलहवाँ भाग) – नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
5. ग्राम–गीत – रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी मंदिर, प्रयाग

परिणाम –विद्यार्थियों को लोक साहित्य के विभिन्न स्वरूपों की जानकारी हो सकेगी एवं लोक साहित्य का संरक्षण तथा अनुशीलन हो सकेगा।

3.1 तृतीय प्रष्न–पत्र (वैकल्पिक 2)

मीडिया की आधुनिक प्रवृत्ति

उद्देष्य–विद्यार्थियों को मीडिया की आधुनिक प्रवृत्ति से अवगत कराना।

पाठ्यांश :

1. मीडिया की आधुनिक प्रवृत्ति, आशय, न्यू मीडिया
2. पीत पत्रकारिता, स्टिंग ऑपरेशन
3. खोजी पत्रकारिता
4. हिन्दी पत्रकारिता की भाषा का वर्तमान स्वरूप, हिंग्लिश
5. सूचना का अधिकार

अनुशंसित ग्रंथ

1 सम्पूर्ण पत्रकारिता : डॉ. अर्जुन तिवारी, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

2 पत्रकारिता : सिद्धांत एवं स्वरूप, डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

3 भारत में पत्रकारिता : आलोक मेहता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली

4 हिन्दी पत्रकारिता, स्वरूप एवं संदर्भ : डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

5 हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव, जवाहरलाल कौल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

परिणाम –मीडिया की आधुनिक प्रवृत्ति से विद्यार्थी अवगत होकर न्यू मीडिया के क्षेत्र में सेवा के अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

4 चतुर्थ प्रष्न–(पत्र वैकल्पिक 1)

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य

उद्देष्य–छत्तीसगढ़ के लोक साहित्य के स्वरूप, उद्‌भव, विकास एवं विभिन्न रूपों की जानकारी प्रदान करना।

1. परिभाषा एवं स्वरूप, लोक संस्कृति एवं संस्कार, अध्ययन एवं संकलन की समस्याएँ
2. लोकगीत–संस्कार गीत, धार्मिक गीत, ऋतु गीत
3. लोकगाथा–भारतीय परंपरा में लोकगाथा, छ.ग. की लोक गाथा : पंडवानी, भरथरी
4. लोककथा–सामान्य परिचय, महत्व, आंचलिक लोक कथाएँ
5. लोकनृत्य– लोक नाटक एवं लोक सुभाषित

अनुशंसित ग्रंथ–

1. लोक साहित्य और संस्कृति – कृष्णदेव उपाध्याय
2. छत्तीसगढ़ी वृहद संदर्भ –छत्तीसगढ़ ग्रंथ अकादमी
3. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य –डॉ. सत्यभामा आडिल
4. छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का अध्ययन–डॉ. दयाशंकर शुक्ल
5. छत्तीसगढ़ की राजनीतिक और सांस्कृतिक परंपरा – डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र, भगवान दास बघेल
6. छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ –उपकार प्रकाशन, आगरा
7. लोक साहित्य का अध्ययन – त्रिलोचन पाण्डेय, लोकभारती, इलाहाबाद

परिणाम –छत्तीसगढ़ की संस्कृति, लोक साहित्य, लोक गीत, लोक नाट्य, लोक कथा के महत्व से विद्यार्थी अवगत हो सकेंगे जो प्रदेश के लोक साहित्य के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

4.1 चतुर्थ प्रष्न–पत्र (वैकल्पिक 2)

प्रचार, विज्ञापन एवं जनसंचार, परियोजना कार्य

उद्देष्य–विद्यार्थियों को मीडिया के क्षेत्र में प्रचार, विज्ञापन के सिद्धातों से अवगत कराना एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना।

1. प्रचार, अर्थ, परिभाषाएँ, प्रकार
2. प्रचार के सिद्धांत
3. विज्ञापन, आशय, विज्ञापन एवं जनसंचार, महत्व
4. विज्ञापन लेखन, भाषा की संरचना, विशेषताएँ
5. परियोजना कार्य–मीडिया संस्थानों में इंटर्नशिप एवं परियोजना

अनुशंसित ग्रंथ

6. सम्पूर्ण पत्रकारिता : डॉ. अर्जुन तिवारी, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
7. पत्रकारिता : सिद्धांत एवं स्वरूप, डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
8. भारत में पत्रकारिता : आलोक मेहता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली
9. हिन्दी पत्रकारिता, स्वरूप एवं संदर्भ : डॉ. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
10. हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव, जवाहरलाल कौल, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

परिणाम –विद्यार्थी परियोजना कार्य के माध्यम से मीडिया का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।